विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ताः-२७/०६/२०२० चतुर्थः पाठः शिशुलालनम्

#रामः---अतिदीर्घःप्रवासोऽयं दारुणश्च ।(विदूषकमवलोक्य जनान्तिकम)कुतूहलेनाविष्टो मातरमनयोर्नामतो वेदितमिच्छामि न युक्तं च स्त्रीगतमनुयोक्तुम् , विशेषतस्तपोवने। तत् कोऽत्राभ्यपायः ?

राम--- यह यात्रा बहुत लम्बी और कष्टदायी है।(विदूषक को देखकर परदे के पीछे) कौतूहलवश घिरे हुए इनकी माता को नाम से जानना चाहता हूं और स्त्री के संबंधित कार्य (पूरा परिचय जानना) उचित नहीं है।विशेषकर तपोवन में। तो यहां क्या उपाय है।

#विदूषकः(जनान्तिकम्) अहं पुनः पृच्छामि ।(प्रकाशम्)किं नामधेया युवयोर्जननी?

विदूषक--- (परदे के पीछे) मैं फिर से पूछता हूं।(प्रकट रूप में) तुम्हारी दोनों की माता किस नाम वाली है?

लवः---तस्याः द्वे नामनी ।

लव ---उनके दो नाम हैं।

#विदूषकः ---कथमिव?

विदूषकः--- कैसै?

#लवः---तपोवनवासिनो देवीति नाम्नाह्वयन्ति भगवान वाल्मीकिर्वधूरिति।

लव---तपोवन निवासी उनको देवी नाम से पुकारते हैं , भगवान वाल्मीकि बहू के नाम से।

#रामः---अपि च इतस्तावद् वयस्य !मुहूर्त्तमात्रम् ।

राम ----मित्र ! तो और इधर भी । थोड़ी देर के लिए।

#विदूषकः ---(उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्

विदूषकः ---(पास जाकर)आप(महाराज) आज्ञा दीजिए।

#रामः---अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटम्बवृत्तान्तः?

(नेपथ्ये) इयती वेला सञ्जाता रामायणगानस्य नियोगः किमर्थं न विधीयते?

राम ---इन दोनों कुमारों का और मेरा पूरी तरह परिवार का विवरण समान है? (परदे के पीछे) इतना समय हो गया रामायण के गाने का कार्य क्यों नहीं किया जा रहा है?

#उभौ ---राजन्! उपाध्यायदूतोऽस्मान् त्वरयति।

उभौ ---महाराज! गुरुवर के दूत हमको जल्दी करने के लिए कह रहे हैं।

#रामः---मयापि सम्माननीय एव मुनिनियोगः।तथाहि .....

राम---मुझे भी गुरुवर का आदेश सम्माननीय है। क्योंकि...